# २. राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद

## कविता का सारांश

तुलसीदास रचित रामचरितमानस के बालकांड का यह प्रसंग भगवान राम, लक्ष्मण और महर्षि परशुराम के बीच हुए संवाद को दर्शाता है। मिथिला में राजा जनक ने शिवजी का धनुष (शिवधनुष) स्वयंवर के लिए रखा था, जिसे कोई भी वीर तोड़ नहीं पाया था। भगवान राम ने सहजता से शिवधनुष उठाकर प्रत्यंचा चढ़ाने का प्रयास किया और वह धनुष टूट गया।

इससे महर्षि परशुराम अत्यंत क्रोधित हो उठे और उन्होंने राम और लक्ष्मण को चुनौती दी। परशुराम, जो क्षत्रियों के शत्रु और महान तपस्वी थे, धनुष टूटने को शिव का अपमान मानते हैं।

लक्ष्मण अपने चतुर और साहसी स्वभाव के कारण परशुराम को व्यंग्यपूर्ण उत्तर देते हैं। वे कहते हैं कि धनुष का टूटना कोई अपराध नहीं और इस पर इतना क्रोध करना अनुचित है। लक्ष्मण के तीखे वचनों से परशुराम और अधिक रुष्ट हो जाते हैं तथा वे अपने परशु (कुठार) और धनुष-बाण का बल दिखाते हैं।

राम शांत और विनम्र रहते हुए परशुराम का सम्मान करते हैं। वे बताते हैं कि धनुष का टूटना केवल भाग्य का संकेत है। अंततः परशुराम को यह ज्ञात होता है कि राम कोई सामान्य मनुष्य नहीं, बल्कि स्वयं भगवान विष्णु के अवतार हैं। परशुराम क्रोध त्यागकर राम का स्वागत और सम्मान करते हैं।

इस प्रसंग में लक्ष्मण की वीरता, राम की विनम्रता और परशुराम की तपस्वी वीरता का सुंदर चित्रण हुआ है। यह कथा संयम, शालीनता और धर्म की स्थापना का संदेश देती है।

# प्रश्न - अभ्यास

1. **परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के लिए कौन-कौन से तर्क दिए?**

   **उत्तर:** लक्ष्मण ने कहा कि धनुष पुराना और जर्जर था, इसलिए वह छूने मात्र से ही टूट गया। धनुष का टूटना कोई अपराध नहीं, बल्कि यह स्वाभाविक था। शिवधनुष पर किसी की विशेष ममता नहीं होनी चाहिए और इसके टूटने से किसी का अपमान नहीं होता।

2. **परशुराम के क्रोध करने पर राम और लक्ष्मण की जो प्रतिक्रियाएँ हुईं उनके आधार पर दोनों के स्वभाव की विशेषताएँ अपने शब्दों में लिखिए।**

   **उत्तर:**

   - **राम** – शांत, विनम्र, धैर्यवान, परशुराम का सम्मान करने वाले।
   - **लक्ष्मण** – तेजस्वी, साहसी, निर्भीक, व्यंग्यपूर्ण उत्तर देने वाले, अन्याय का विरोध करने वाले।

3. **लक्ष्मण और परशुराम के संवाद का जो अंश आपको सबसे अच्छा लगा उसे अपने शब्दों में संवाद शैली में लिखिए।**

   **उत्तर:**

   **लक्ष्मण** : "मुनिवर! यह तो टूटा हुआ पुराना धनुष था, इसमें क्या छति-लाभ? आप इतना क्रोधित क्यों हैं?"

   **परशुराम** : "रे बालक! तुम अनुचित वचन बोल रहे हो, यह शिवधनुष समस्त संसार में प्रसिद्ध है।"

   **लक्ष्मण** : "हम धनुष-बाण से नहीं डरते। यह कोई कुम्हड़े की बेल नहीं कि उंगली दिखाने से मर जाएगी।"

4. **परशुराम ने अपने विषय में सभा में क्या-क्या कहा, निम्न पद्यांश के आधार पर लिखिए-**

   **बाल ब्रह्मचारी अति कोही। बिस्वबिदित क्षत्रियकुल द्रोही।।**

   **भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही। बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही।।**

   **सहसबाहुभुज छेदनिहारा। परसु बिलोकु महीपकुमारा।।**

   **मातु पितहि जनि सोचबस करसि महिसकिसोरा।**

   **गर्भन्ह के अर्भक दलन परसु मोर अति घोर।।**

   **उत्तर:** परशुराम ने कहा कि वे बाल ब्रह्मचारी हैं, क्षत्रिय कुल के शत्रु हैं, उन्होंने अपने बल से पृथ्वी को अनेक बार क्षत्रियों से विहीन किया और उसे ब्राह्मणों को सौंपा। वे सहस्रबाहु जैसे महाबली को मारने वाले हैं और उनका परशु (कुठार) गर्भस्थ शिशुओं तक का नाश करने में समर्थ है।

5. **लक्ष्मण ने वीर योद्धा की क्या-क्या विशेषताएँ बताईं?**

   **उत्तर:** लक्ष्मण ने कहा कि वीर योद्धा कभी व्यर्थ क्रोध नहीं करता, शत्रु के साथ ही युद्ध करता है, और धर्म का पालन करता है। वह दूसरों को केवल भयभीत करने के लिए शस्त्र नहीं दिखाता।

**6. साहस और शक्ति के साथ विनम्रता हो तो बेहतर है। इस कथन पर अपने विचार लिखिए।**

**उत्तर**: साहस और शक्ति व्यक्ति को सामर्थ्यवान बनाते हैं, पर यदि उसमें विनम्रता न हो तो वह दूसरों के लिए भय का कारण बन सकता है। विनम्रता शक्ति का सही उपयोग करना सिखाती है। इस प्रसंग में राम का व्यवहार इसका उत्तम उदाहरण है – वे परमशक्तिमान होते हुए भी विनम्र बने रहते हैं।

**7. भाव स्पष्ट कीजिए-**

**(क) बिहसि लखनु बोले मृदु बानी। अहो मुनीसु महाभट मानी।।**

**पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारु। चहत उड़ावन फूँकि पहारु।।**

**उत्तर**: लक्ष्मण कहते हैं: "अरे मुनिवर! आप महान योद्धा हैं, बार-बार अपना परशु दिखा रहे हैं, मानो पहाड़ उड़ाकर फेंक देंगे।" यहाँ लक्ष्मण का व्यंग्य झलकता है।

**(ख) इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं। जे तरजनी देखि मरि जाहीं।।**

**उत्तर**: "यहाँ कोई कुम्हड़े की बेल नहीं कि उंगली दिखाने से मर जाए।" – लक्ष्मण कहते हैं कि हम भयभीत होने वालों में से नहीं हैं।

**(ग) देखि कुठारु सरासन बाना। मैं कछु कहा सहित अभिमाना।।**

**उत्तर**: "कुठार और धनुष देखकर मैंने कुछ कहा है, पर अभिमान से नहीं।" – लक्ष्मण का अर्थ है कि उनका प्रतिवाद तर्कसंगत है, अहंकार से नहीं।

**8. पाठ के आधार पर तुलसी के भाषा सौंदर्य पर दस पंक्तियाँ लिखिए।**

**उत्तर**: **तुलसी की भाषा का सौंदर्य (दस पंक्तियाँ)**

- तुलसीदास की भाषा अवधी है, जिसमें सरलता और सहजता है।
- संवाद शैली जीवंत है, जिससे पात्रों के स्वभाव स्पष्ट होते हैं।
- व्यंग्य और हास्य का सुंदर मिश्रण दिखाई देता है।
- वीर रस और करुण रस का अद्भुत समन्वय है।
- भाषा में लयात्मकता और संगीतात्मकता है।
- पदों में छंद, तुकांत और अनुप्रास का प्रभावी प्रयोग है।
- पात्रों की मानसिक स्थिति भाषा से स्पष्ट होती है।
- संस्कृतनिष्ठ शब्दावली से भाषा का गौरव बढ़ता है।
- संवादों में तीव्रता और यथार्थ चित्रण है।
- तुलसी की भाषा जनमानस के निकट है, इसलिए अत्यंत प्रभावशाली है।

**9. इस पूरे प्रसंग में व्यंग्य का अनूठा सौंदर्य है। उदाहरणों के साथ स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर**: इस प्रसंग में लक्ष्मण के वचनों में व्यंग्य का अद्भुत सौंदर्य है।

- "इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं। जे तरजनी देखि मरि जाहीं।" – वे कहते हैं कि हम डरकर मरने वालों में से नहीं हैं।
- "पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारु। चहत उड़ावन फूँकि पहारु।" – परशुराम को व्यंग्य करते हुए कहते हैं कि बार-बार परशु दिखाने से पहाड़ उड़ाने का क्या प्रयोजन?

इससे लक्ष्मण का निर्भीक और हास्यपूर्ण स्वभाव सामने आता है।

**10. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार पहचान कर लिखिए-**

**(क) बालकु बोलि बधौं नहिं तोही।**

**उत्तर: अनुप्रास अलंकार ('ब' ध्वनि की पुनरावृत्ति)।**

**(ख) कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा।**

**उत्तर: उपमा अलंकार (बचनों की तुलना करोड़ वज्र से)।**

## रचना और अभिव्यक्ति

**11. "सामाजिक जीवन में क्रोध की ज़रूरत बराबर पड़ती है। यदि क्रोध न हो तो मनुष्य दूसरे के द्वारा पहुँचाए जाने वाले बहुत से कष्टों की चिर-निवृत्ति का उपाय ही न कर सके।"**

**आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी का यह कथन इस बात की पुष्टि करता है कि क्रोध हमेशा नकारात्मक भाव लिए नहीं होता बल्कि कभी-कभी सकारात्मक भी होता है। इसके पक्ष या विपक्ष में अपना मत प्रकट कीजिए।**

**उत्तर**: क्रोध हमेशा नकारात्मक नहीं होता; यदि यह अन्याय का प्रतिकार करने और समाज में न्याय स्थापित करने के लिए हो, तो यह सकारात्मक है। परंतु संयमित क्रोध ही उपयोगी है।

**12. अपने किसी परिचित या मित्र के स्वभाव की विशेषताएँ लिखिए।**

**उत्तर**: उदाहरण: "मेरा मित्र साहसी है, लेकिन शांत स्वभाव का है। वह मददगार और ईमानदार है।"

**13. दूसरों की क्षमताओं को कम नहीं समझना चाहिए-इस शीर्षक को ध्यान में रखते हुए एक कहानी लिखिए।**

**उत्तर**: कहानी में एक छोटा पात्र अपनी बुद्धि और साहस से बड़ा कार्य करता है, जिससे यह शिक्षा मिलती है कि किसी को कम मत आँको।

**14. उन घटनाओं को याद करके लिखिए जब आपने अन्याय का प्रतिकार किया हो।**

**उत्तर**: छात्र अपने अनुभव से कोई घटना लिख सकते हैं, जैसे स्कूल में या घर पर किसी का पक्ष लिया हो।

**15. अवधी भाषा आज किन-किन क्षेत्रों में बोली जाती है?**

**उत्तर**: अवधी भाषा आज उत्तर प्रदेश के अवध क्षेत्र (लखनऊ, फैजाबाद, प्रतापगढ़, सुल्तानपुर, रायबरेली, गोंडा, बहराइच आदि) और आसपास के क्षेत्रों में बोली जाती है।